

17. (ताम्) दिधत्तमाणां हृदयं सबन्धनम् 12, 106. — Vgl. दिधत्ता, दिधन्तु. — caus. vom desid. Jmd antreiben, dass er zum Verbrennen sich anschicke: तं सुस्थयत्तः सचिवा नरेन्द्रं दिधत्तयत्तः BHATT. 3, 33.

— intens. दन्दहीति, दन्दक्षते (भावकर्तृयाम्) P. 7, 4, 86. 3, 1, 24. Vop. 20, 2, 8. 1) trans. vollständig verbrennen, versengen, zu Grunde richten; act.: दावाग्निदशो मे ऽद्य दन्दहीति शुभो तनुम् HARIV. 8726. दन्दग्धि (2. imperat.) दन्दग्ध्यरिसैन्यमाप्नु कर्तं यथा वातसखो क्रुताशः BHAG. P. 6, 8, 24. med.: यत्तु दन्दक्षते लोकमदो दुःखाकरोति माम् ÇIC. 2, 11. — 2) med. vollständig in Feuer aufgehen, vor Gluth vergehen: श्रेयो अन्नस्य मुखानलेन दन्दक्षमानेन स निरीदय विश्वम् BHAG. P. 2, 2, 26. ब्रह्मतेजसातिदुर्विषहेणा दन्दक्षमानेन वपुषा 5, 9, 18. दन्दक्षमाना ज्वलनेन वर्धता सर्प्यासमुत्थेन HARIV. 7040. राजप्रयोजनविनाशमवलोक्य दन्दक्षमानहृदयः PAÑKAT. 58, 2.

— अति 1) übermäßig brennen: अतिदग्ध सुÇR. 2, 47, 19. es Jmd überaus heiss machen: एष चाति रणे भीष्मो दक्षते वै मक्षाचमूम् MBH. 6, 5238. — 2) hinüberflammen über: स इमा सर्वा नदीरतिददाह ÇAT. Br. 1, 4, 4, 14. अन्नतिदग्ध ebend.

— अनु 1) hinterher verbrennen: दग्धमेवानुदक्षति (wohl kahl: aus dem Vorbergehenden zu ergänzen, da अनुदक्षति wohl kaum = अनुदक्षते sein kann) कृतमेवानुहन्त्यते । नश्यते नष्टमेवाप्रे MBH. 12, 8107. — 2) aufbrennen (von Anfang bis zu Ende): अनु दृक् सकूर्वाङ्गव्यादः RV. 10, 87, 19. यत्र कृपीटमनु तदक्षति 28, 8. AV. 2, 23, 4. न त्वामनुदक्षेत्क्रुद्धो वनमग्निर्विधितः R. 2, 63, 41.

— अय् abbrennen, wegbrennen: वीजान्यग्रयपदधानि नरो कृत्ति यथा पुनः MBH. 12, 7705. durch Gluth vertreiben: विश्वा अग्ने ऽप्यं दक्षारोतिः RV. 7, 1, 7.

— अपि anbrennen (अग्निः) षोडशधा वृत्रस्य भोगानप्यदक्षत् TS. 2, 1, 4, 6. पाप्मानम् 7. KĀṬH. 10, 10, 21, 8.

— अभि anbrennen, verbrennen: स यो व्यस्रादभि दन्तुर्वोम् RV. 2, 4, 7. तमग्निर्वाभिदक्षेत् ÇAT. Br. 3, 6, 2, 20. यस्य सोममभिदक्षेत् KĀṬH. 35, 16. अभिदग्ध ÇĀÑKH. ÇR. 13, 6, 8.

— अय् abbrennen, zusammenbrennen: अवादेको द्विव आ दस्युमुञ्चा RV. 1, 33, 7. काष्ठैर्बहुभिर्वदक्ष्य सुÇR. 2, 35, 19. वङ्गिनैवावदक्षते 313, 15. अयदग्ध KAUC. 71. — Vgl. अयदाय, अयदाह.

— आ s. आदक्षन्. Statt प्राणानादग्धा PAÑKAT. I, 392 ist mit JĀG. 1, 340 प्राणानादग्धा zu lesen. — caus. pass. sich verbrennen: स यथा तत्र नादाक्षेत KHĀND. Up. 6, 16, 3. Man hätte naदाक्षेत erwartet.

— उप anbrennen: उप हृ तदक्षेद्यदत्तं कुर्यादप्रजज्ञि वै रेत उपदग्धम् ÇAT. Br. 2, 3, 4, 14. यवमुष्टिं भृञ्जत्पनुदक्षन् GOBH. 3, 7, 4. उपदग्धेन हृविषा ÇAT. Br. 11, 4, 4, 2. भूमरूपदग्धं समुत्खाय KAUC. 69. Feuer anlegen an (acc.): सुप्तानुपाधानीह्वलकान् MBH. 3, 546.

— नि niederbrennen, durch Feuer verzehren: रत्नो नि धत्ति RV. 6, 18, 10. नि मायिनस्तपुषा रत्नसो दृह 8, 23, 14. 1, 99, 1. KAUC. 52. 83. pass.: पाण्डुपावकमासाय न्यदक्षन् नराधिपाः MBH. 1, 4454. — Vgl. निदाय.

— निम् ausbrennen, verbrennen, durch Feuer verzehren, vollständig vernichten: शीताः सत्तो हृदयं निर्दक्षति RV. 10, 34, 9. अग्निर्द्वयो निर्दक्ष्यत्रयम् 80, 3. 103, 12. AV. 7, 108, 2. 9, 2, 4. 3. 31. TS. 2, 2, 5, 2. तस्यान्तिषी निर्ददाह ÇAT. Br. 1, 7, 4, 6. इदं वा असावादित्य उच्यन्नेव यथायमग्निर्नि- III. Theil.

र्दक्षेवमोषधीरज्ञायं निर्दक्षति 5, 3, 4, 16. 1, 1, 4, 17. 3, 1, 2, 6. निर्दक्षः infla. 12, 4, 2, 4. — KAUC. 90. 131. यथेधस्तेजसा वङ्गिः प्राप्तं निर्दक्षति क्षपात् M. 11, 246. (अग्निवर्णया सूरया) काये निर्दग्धे 90. BHAG. P. 5, 24, 28. 6, 4, 6. न चोषरां न निर्दग्धा मर्हो दद्यात् MBH. 13, 3341. धूमनिर्दग्धकूर्च RĀGĀ-TAR. 5, 461. निर्दक्षेत् च यत्कृत्स्नं त्रैलोक्यम् MBH. 13, 856. कालाग्निमिव बीभत्सुं निर्दक्षन्मिव प्रजाः 4, 1702. 1, 241. भिक्षा हृदि शराः पञ्च निर्दक्षन्तीव मे तनुम् HARIV. 4607. R. 1, 54, 22. 55, 21. 2, 61, 21. MBH. 4, 1162. नाहं जनं निर्दक्षेयं दृष्ट्वा घोरेण चतुषा 2, 2631. DAÇAK. in BENF. Chr. 186, 1. वैदेहो रावणः क्रुद्धो निर्दक्षन्निव राजसः R. 3, 55, 26. 5, 33, 37. PRAB. 82, 10. VID. 145. (यस्य चित्तम्) न निर्दक्षति कोपकृतानुशयः BHART. 2, 76. एतच्छयं हि पुरुषं निर्दक्षेदवमानिनम् M. 4, 136. (देवाः) श्वज्ञातावधूताश्च निर्दक्षन्त्यधमात्रान् MBH. 13, 4713. R. 1, 55, 6. डर्हदः साधु निर्दक्षन् । मुहृदस्तर्पयन्कामैः 2, 106, 26. (एनः) तत्सर्वं निर्दक्षतापु तपसैव तपोधनाः M. 11, 241. R. 2, 36, 29. BHAG. P. 7, 7, 36. — Vgl. निर्दक्षन्, निर्दाह. — caus. verbrennen lassen RĀGĀ-TAR. 6, 171.

— अनुनिम् nacheinander —, der Reihe nach verbrennen: तेषां पृथानामधमा तमांस्यग्ने वास्तून्यनुनिर्दक्ष् तम् AV. 9, 2, 9.

— विनिम् verbrennen, durch Feuer verzehren, vollständig vernichten: जगदिर्निर्दक्षेत् (अस्त्रम्) MBH. 1, 5307. ARĀ. 3, 52. एष सेनाः — अग्निवत्समोरे तात चरिष्यति विनिर्दक्षन् MBH. 5, 5769. चक्रानलविनिर्दग्ध HARIV. 5935. R. GOBH. 1, 29, 11. 3, 35, 93. (एनम्) मत्प्रभावविनिर्दग्धं पतंगमिव वङ्गिना MBH. 2, 1492. ब्रह्मशापविनिर्दग्ध 16, 279. 3, 14829. MĀRK. P. 39, 61. तयाज्ञानं विनिर्दक्षन् BHAG. P. 9, 7, 24. — Vgl. विनिर्दक्षन्.

— परि umbrennen, umglühen, verbrennen: अग्नेयस्वभावात्परिदक्षति काण्डमुग्रा हृदयं चेति सुÇR. 1, 153, 21. कामेत्स पाण्डुः परिदक्ष्यमानः 2, 503, 1. दावाग्निना शुचिवने परिदक्ष्यमाने BHAG. P. 2, 7, 29. गाण्डीवं संसेते हस्तात्त्रैकैव परिदक्षते brennt, gliiht BHAG. 1, 30. दिशि दिशि परिदग्धा भूमयः पावकेन R. 1, 24. संक्षारकाले परिदग्धकाया ब्रह्माणमायाति सदा प्रजा हि MBH. 12, 10076. HARIV. 548. — Vgl. परिदक्षन्, परिदाहन्.

— संपरि pass. verbrennen, vor Gluth vergehen: गतेन तेनास्मि कृतो विचेता गात्रं च मे संपरिदक्षतीव MBH. 3, 10067.

— प्र verbrennen, vernichten: प्र सु विश्वाव्रतसो धृदय्ये RV. 1, 76, 3. नैषां शिभ्रं प्र दक्षति ज्ञातवैदाः AV. 4, 34, 2. 36, 1. 10, 8, 39. 13, 1, 29. प्रजां च प्रमृश्य प्रदक्षेत् ÇAT. Br. 14, 2, 2, 45. 54. 2, 2, 4, 2. 6, 2, 15. 11, 4, 2, 16. सर्वं वै मायं प्रधह्यति TBH. 2, 3, 2, 1. TS. 2, 2, 6, 6. ईश्वरं वै व्रतमविसृष्टं प्रदक्षैः 1, 7, 6, 6. तन्ना मा प्रधातीरिति (nach ÇĀÑK. Vertauschung der Personen; viell. °नीदिति zu lesen) KHĀND. Up. 4, 1, 2. प्रादक्षन् शरूपान्यन्ये प्रजानो ज्वलितोल्मुकिः BHAG. P. 7, 2, 15. न पावकस्त्वा प्रदक्षिष्यति MBH. 1, 2120. 8362. पाण्डवाग्निम् — दीप्तं प्रदक्षन्मिवाहितान् 4, 1520. भीमसेनदवाग्नेस्तु मम पुत्रास्तृपोयमान् । प्रधह्यतः (so st. प्रधत्ततः zu lesen) 7, 5277. 1, 1762. 5, 678. 7, 6092. 16, 274. सर्वाणि मन्यानि च वासुदेवः प्रधह्यते सायकवङ्गिजालैः 3, 40274. — HARIV. 11601. 13888. मां शोकाग्निः — प्रधह्यति R. 2, 24, 8. 94, 15. R. GOBH. 2, 25, 6. तत्कुलं प्रदक्षति BHAG. P. 1, 7, 48. 31. 4. 4, 2. 9, 5, 12. केलिः प्रदक्षति मञ्जरी (so zu lesen) प्रङ्गरो ऽन्यानि PAÑKAT. I, 191. — pass. in Flammen gerathen, brennen, verbrennen: वृत्तस्येव प्रदक्षतः MBH. 2, 2394. वस्त्रं प्रदक्षते VARĀH. BRH. S. 72, 6. तस्याः कृपाचतुर्भ्यां प्रदक्षोतापि मेदिनी MBH. 2, 2689. प्रदग्ध verbrannt ÇAT. Br. 11, 1, 6, 33. R. 3, 42, 59. VARĀH. BRH. S. 72, 2. येन पूर्वं प्रदग्धानि शत्रुमैन्यानि 36